ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 43 कुल पृष्ठ-8 27 अप्रैल से 3 मई, 2017 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 वै. शु.-01

विश्व के कोने-कोने में वेद ज्ञान को पहुँचाने का संकल्प

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में वैदिक विद्वानों की महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी

24 अप्रैल, 2017 (सोमवार) को आर्य समाज डिफेन्स कालोनी में सम्पन्न आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् संगोष्ठी में पहुँचे

विश्वविख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की पहल पर वैदिक विद्वानों की एक अति महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी (सोमवार) 24 अप्रैल, 2017 को प्रातः 10 से 2 बजे तक आर्य समाज डिफेन्स कालोनी, डी-ब्लाक, नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें वेद ज्ञान को विश्व के कोने-कोने तक प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए वर्तमान में प्रचलित आधुनिकतम प्रचार माध्यमों के द्वारा अभियान चलाने एवं आगामी दिनों में विश्व वेद सम्मेलन आयोजित करने के लिए विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी का संयोजन आर्य समाज के प्रखर विद्वान् डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस. ने बड़ी कुशलता के साथ किया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. महावीर मीमांसक, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद एवं पूर्व पुलिस कमिश्नर मुम्बई), डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व शिक्षा मंत्री एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष), डॉ. धर्मपाल आर्य (पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), डॉ. शशि प्रभा कुमार (पूर्व कुलपति विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश), डॉ. पवित्रा वेदालंकार (आचार्या कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश), श्री सूर्य प्रकाश कपूर (वैज्ञानिक), स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डॉ. बिश्राम रामबिलास (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका), डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री (पूर्व सचिव, संस्कृत अकादमी दिल्ली), डॉ. सुधीर कुमार (अध्यक्ष संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय), प्रिं. खजान सिंह गुलिया एवं प्रिं. जगदेव सिंह रोहतक, श्री अशोक आर्य (कस्टम कमिश्नर बंगलौर), कै. अशोक गुलाटी, प्रो. श्योताज सिंह (महामंत्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा), श्री रविदेव गुप्ता (प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल), डॉ. देव शर्मा एवं श्री सुबोध कुमार आदि के अतिरिक्त कई प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक की व्यवस्था में एमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री आनन्द चौहान की प्रेरणा तथा आर्य समाज के प्रधान श्री अजय चौहान और आर्य समाज के मंत्री श्री अजय सहगल का विशेष सहयोग रहा।

सर्वप्रथम आर्य समाज की ओर से दक्षिण अफ्रीका से पधारे डॉ. बिश्राम रामबिलास, डॉ. सत्यपाल सिंह एवं डॉ. महावीर मीमांसक का भव्य स्वागत किया गया। इन्हें शॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री अजय चौहान ने उनका तथा अन्य उपस्थित समस्त विद्वानों का स्वागत तथा आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी में स्वामी अग्निवेश जी ने प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में जब पूरा विश्व अशांति, टकराव, भुखमरी, गरीबी एवं पर्यावरण संकट जैसी गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है ऐसी स्थिति में ये और ऐसी सैकड़ों विकट समस्याओं के समाधान के लिए वेदाधारित योजना एवं कार्यक्रम पूरे विश्व एवं मानवता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। एक ईश्वर तथा उसकी बनाई हुई सृष्टि में समस्त मनुष्य एवं अन्य प्राणियों को मिलाकर एक परिवार अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् की वैश्विक विचारधारा वेद के सिवाय दुनिया के किसी मजहब या सम्प्रदाय में नहीं मिलती। वेद सार्वभौम एवं सार्वकालिक ज्ञान है। इनमें किसी भी प्रकार की संकीर्णता, साम्प्रदायिकता, इतिहास अथवा भूगोल का वर्णन नहीं है, बल्कि इसमें मानव मात्र के उत्थान एवं कल्याण के लिए परमात्मा के द्वारा दिया गया अमूल्य ज्ञान है। वेद के इस ज्ञान को हम दुनिया के कोने-कोने में मनुष्य मात्र तक पहुँचाकर यह सिद्ध कर सकते हैं कि वेद ज्ञान को अपनाने से ही संसार की समस्त समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। स्वामी जी ने इसके लिए एक विश्व वेद सम्मेलन आयोजित करने का प्रस्ताव रखा और सभी से आग्रह किया कि अपनी-अपनी जिम्मेदारी लेकर उक्त वेद सम्मेलन को सफल बनायें। इस प्रस्ताव को सभी विद्वानों ने समर्थन देकर सर्वसम्मति से पारित किया और निश्चय हुआ कि आगामी नवम्बर, 2017 में भारत की राजधानी दिल्ली में सम्मेलन आयोजित किया जायेगा जिसमें देश-विदेश के लब्धप्रतिष्ठ वैदिक विद्वानों को आमंत्रित किया जायेगा। सम्मेलन की रूपरेखा एवं तैयारी के लिए डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस. को दायित्व सौंपा गया कि वे मुख्य रूप से अपना पूरा समय देकर अपने समन्वय संगठन के माध्यम से इस वेद सम्मेलन की तैयारी शुरू कर दें।

संगोष्ठी में डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने सुझाव दिया कि महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित वेदभाष्य एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् तैयार किये जायें। उन्होंने सुझाव दिया कि वेदों को प्रतिष्ठित करने के लिए आवश्यक है कि हमारे विद्वान् संस्कृत भाषा को दुनिया की समस्त भाषाओं की जननी सिद्ध करें। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि वेद सम्मेलन के लिए विपुल धन-संग्रह एवं व्यापक तैयारी की जाये तथा सम्मेलन का एजेण्डा तैयार करने के लिए चुने हुए विद्वानों की एक समिति गठित की जाये। इस प्रकार सभी विद्वानों ने अपने-अपने ठोस सुझाव देकर वेद सम्मेलन को सफल बनाने के सूत्र प्रस्तुत किये। उपस्थित सभी विद्वानों ने अपने सुझावों को प्रस्तुत करते हुए इस सम्मेलन के सफल होने की कामना की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बुद्धि मेधा तथा ऋतम्भरा प्रज्ञा

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

क्या अन्तर है इन तीनों में? नीचे यही स्पष्टीकरण किया जायेगा। बुद्धि तो मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सभी में होती है। हां सबमें समान नहीं, अपितु किसी में बहुत कम तो किसी में सामान्य तथा किसी में अधिक। एक गधे, शेर तथा दुष्ट व्यक्ति में भी बुद्धि होती है। दुष्ट मनुष्य अति बुद्धिमान हो सकता है, किन्तु उसका आचरण तो पशु तुल्य ही रहेगा। अनेक बुद्धिमान व्यक्ति भी पशुतुल्य तथा पापमय आचरण करते ही हैं वे इसमें अपनी बुद्धि भी लगाते हैं। इसीलिए मन्त्र में प्रार्थना की गई है – धियो यो नः प्रचोदयात्। वह सविता=प्रेरक देव हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करे। मेधा के लिए यह बात नहीं कही गई। लोक तथा शास्त्रों में बुद्धि वाले को बुद्धिमान तथा मेधा सम्पन्न को मेधावी कहते हैं।

वेदों में मेधा प्राप्ति की बात तो कही गई है उसके संशोधन की नहीं क्योंकि वह स्वयं शुद्ध है। मेधा में वरुणो ददातु इत्यादि मन्त्रों में मेधा प्राप्ति की बात अनेकत्र कही गई है। आचार्य यास्क ने निरूक्त में एक श्लोक उद्धृत किया है कि मेधावी छात्र को ही विद्या देनी चाहिए। यमेव विद्यात् शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपत्रम्। यहां विद्या के अधिकारी को अन्य गुणों के साथ मेधावी होना भी आवश्यक माना गया है। बुद्धिमान होना नहीं। मेधा क्या है? मेधा वही है जिसकी उपासना देव तथा पितर करते हैं। देव कौन? दानात्, दीपनात् द्योतनात्। जो देते ही रहते हैं लेते नहीं हैं। जो स्वयं ज्ञान से प्रकाशित हैं तथा दूसरों को भी ज्ञान से द्योतित करते हैं। ये स्वार्थवश तथा सामान्य बुद्धि से उल्टे–सीधे कार्य करने वाले नहीं हैं। ऐसा तो मनुष्य करते हैं, क्योंकि वे बुद्धिमान हैं। बुद्धि गलत तथा विपरीत कार्यों में भी चल सकती है, मेधा नहीं।। पितर भी देवों की भांति मेधा की ही उपासना करते हैं –

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु।।

हे अग्रणी ज्ञान स्वरूप परमेश्वर मुझे भी आप मेधावी बना दो। मैं मेधावी बनकर पितर बन जाऊँगा। यहां घर के पितर गृहीत नहीं हैं, अपितु इसका अर्थ पालक है। जो समाज की पालना करते हैं, रक्षा करते हैं, वे पितर हैं तथा जो ज्ञान प्रदान करते हैं, वे देव हैं। इन दोनों गुणों से ही समाज की रक्षा होती है जबकि केवल बुद्धि रखने वाले व्यक्ति समाज के लिए हानिकारक भी होते हैं। बस यही अन्तर है बुद्धि तथा मेधा में।

ऋतम्भरा प्रज्ञा इन दोनों से भिन्न हैं। इसकी चर्चा पतंजलि मुनि ने योगदर्शन में की है। यह योगी को ही प्राप्त होती है। देव तथा पितरों को भी नहीं। इसके विषय में व्यास जी कहते हैं – या ऋतमेव विभर्ति। नास्त्यत्र विपर्यासगन्धोऽर्यि। यह प्रज्ञा केवल ऋत ग्राहिका होती है। विशुद्ध ध्यान के पश्चात् इसकी प्राप्ति होती है, वह भी केवल योगी को। इसीलिए मनुष्य मात्र के लिए इसकी कामना नहीं की गई। यही अन्तर है इन तीनों शब्दों में तथा इनके धारक प्राणियों में।

जब मैंने राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र बाबू की कुर्सी में कंधा लगाया

– मामचन्द्र रिवाड़िया

मैं अजमेरी गेट से राजघाट जा रहा था। मेरा एक साथी पूछने लगा – 'भाई कहां जा रहे हो।'

'राजघाट जा रहा हूं।

'वहां क्या है?'

'शुक्रवार शाम की प्रार्थना।' उसमें शामिल होने में मुझे बड़ा आनन्द आता है। मैंने कहा।

(सब्जी बेचने वाले के बालक हो। क्या तुम्हें इतने बड़े–बड़े आदमियों में बैठते हुए संकोच नहीं होता।) मेरा साथी कहने लगा।

संकोच की क्या बात है। आज के समाजवादी युग में कौन बड़ा और कौन छोटा है, भाई। सब समान हैं। देश के कानून और संविधान में बड़े–छोटे का भेदभाव दूर कर दिया है। मैंने बड़ा नम्र होकर, मगर आत्मविश्वास से कहा।

मालूम होता है, कुछ पढ़ लिख गये हो। सपनों की दुनिया में विचरते हो। कहां तुम सब्जी बेचने वाले के लड़के और कहां राजघाट की प्रार्थनासभा। मेरा साथी कहने लगा।

भाई मैं तो गांधी साहित्य बड़ी श्रद्धा भक्ति से पढ़ता रहा हूँ और पढ़ता रहूंगा। भला, उनसे बढ़कर हमारा सखा कौन हो सकता है। उन्हीं के कारण मुझमें यह साहस पैदा हुआ है कि मैं बड़े आदमियों में उठ–बैठ सकता हूँ। मैंने अपने साथी को बताया।

मेरी बातें सुनकर मेरा यह साथी मेरे साथ हो लिया। हम राजघाट पहुंच गये। शाम के 5 बजे होंगे। रामधुन शुरू हुई। कुरान शरीफ, गीता उपनिषद् आदि का पाठ हुआ। इतने में प्रार्थना सभा में मुझे कुछ हलचल होती दिखाई दी।

मैं अपने समीप बैठे एक सज्जन पुरुष से पूछ ही बैठा यह क्या खुसर–पुसर हो रही हैं। क्या मामला हैं?

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी प्रार्थना सभा में भाग लेने के लिए पधार रहे हैं। सज्जन पुरुष ने मुझे बताया। यह सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मन ही मन में सोचने लगा कि अब तो मुझे देशरत्न का सान्निध्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिलेगा। कोई फोटोग्राफर फोटो खींचता होगा तो उससे निवेदन करूंगा कि जरा अपने कैमरे का फोकस इधर भी कर लेना। राष्ट्रपति जी पधारे। आंखे बंद कर समाधिस्थ हो गये। मैं भी चुपचाप सरकते–सरकते आगे आ पहुंचा। सामने राष्ट्रपति जी बैठे थे और उनके पास की पंक्ति में मैं सबसे आगे बैठा था। मैंने अपने जीवन को धन्य समझा। मैं सब्जी बेचने वाले का लड़का हूं तो क्या हो गया। गांधी जी की कृपा से मुझे देश के सर्वोच्च नेता के सामने बैठने का सुअवसर मिल गया।

प्रार्थना समाप्त हुई। राष्ट्रपति जी उठकर चल दिये। मैं भी उनके पीछे हो लिया। उनकी कार दक्षिणी द्वार से बाहर खड़ी थी। अंगरक्षकों के पहरे में राष्ट्रपति द्वार की ओर बढ़े। वे एक पहियेदार कुर्सी पर बैठकर जा रहे थे। मैं भी कुर्सी के आसपास चला जा रहा था।

एक अंगरक्षक क्यों भाई कहां जाते हो? कहीं नहीं भाई। दर्शनों का प्यासा हूं। राष्ट्रपति जी के दर्शन करके अपना सौभाग्य मान रहा हूं। अतः कृपा करके मुझे जरा साथ–साथ चलने दो। मैंने बड़ी ही दीन भावना से कहा।

एक अंगरक्षक पर न जाने क्या जादू हो गया। बोला अच्छा। गड़बड़ न करना चलते जाओ।

मैं चलता ही रहा। फाटक से पहले ही सीढ़ियां आ गई। श्री राष्ट्रपति जी उतरने को हुए।

श्रीमान् बैठे रहिये। अंगरक्षक ने राष्ट्रपति जी से निवेदन किया।

दो अंगरक्षक आगे बढ़े। उन्होंने पहियेदार कुर्सी को अपने कन्धों पर उठाया। मुझसे रहा नहीं गया। मैं भी आगे बढ़ा और अंगरक्षकों के साथ मैंने भी कुर्सी को कन्धा लगाया। कुर्सी फाटक से बाहर बिजलीघर जाने वाली सड़क पर रख दी गई। राष्ट्रपति जी कुर्सी से उतरे। मैंने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया। जिसका उत्तर उन्होंने भी हाथ जोड़कर दिया। इसके बाद वे कार में बैठकर राष्ट्रपति भवन चले गये।

यह घटना 11 मई, 1962 की है, जब श्रद्धेय राष्ट्रपति जी राष्ट्रपति पद से संन्यास लेकर सदाकत आश्रम जाने वाले थे। दुर्लभ मिलन के ये क्षण मेरे हृदय पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं।

संस्थापक महामंत्री आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–27
मो.:–9212003162

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता आचार्य सत्यानन्द जी नैष्ठिक का देहावसान

जीवन की अन्तिम श्वांस तक वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार तथा प्रकाशन एवं वितरण में संकल्पित आचार्य सत्यानन्द जी नैष्ठिक का 2 अप्रैल, 2017 को हिमालयन अस्पताल, देहरादून में देहावसान हो गया, वे 80 वर्ष के थे। 7 जुलाई, 1937 को गाँव कत्तलहेड़ी जिला करनाल, हरियाणा में जन्मे सत्यानन्द जी ने 1965 में घरबार छोड़कर वैराग्य का रास्ता अपनाया। गुरुकुल घरौंडा, गुरुकुल सिंहपुरा, गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार आदि संस्थाओं में एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करके वे आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में जुट गये। आपकी साहित्य प्रकाशन एवं इसके प्रचार–प्रसार में विशेष रुचि थी। आपने सत्य धर्म प्रकाशन की स्थापना करके अत्यन्त उत्तम कोटि का साहित्य प्रकाशित किया और उसे देश–विदेश में अपने प्रयत्न तथा पुरुषार्थ से विक्रय द्वारा प्रसारित किया। आपके पास दुर्लभ वैदिक साहित्य का अनुपम संग्रह था जिसे आपने गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार को भेंट दे दिया था। कई वर्षों से आपका स्वास्थ्य खराब चल रहा था, साहित्य के प्रचार–प्रसार में अथक परिश्रम करने के कारण स्वास्थ्य और अधिक बिगड़ता चला गया और अन्त में आपका देहावसान हो गया। आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक के देहावसान से आर्य समाज ने एक समर्पित नैष्ठिक कार्यकर्ता खो दिया है। यह आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

भारतीय समाज के सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधार में–

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– डॉ० चन्द्रपाल सिंह

सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधारः–

परिवर्तन समाज का एक अनिवार्य नियम है। आदिकाल से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, चाहे मनुष्य ने उन हो रहे परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई या नहीं। भारतीय समाज भी परिवर्तन के इस नियम से अछूता नहीं रहा, परन्तु शताब्दियों की राजनैतिक पराधीनता के कारण इन परिवर्तनों के प्रति उसमें कुछ असंवेदनशीलता आ गई। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों को दुर्बलता, दरिद्रता, हीनभावना तथा अन्य विकारों का शिकार बनना पड़ा। राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्पीड़न एवं आत्मबोध के अभाव ने भारतीय समाज में बहुत–सी ऐसी कुण्ठाओं को जन्म दिया जिनका सहज उन्मूलन सम्भव नहीं था।

विदेशी शासन से, चाहे वह मुस्लिम रहा हो या ब्रिटिश, उत्पन्न पराजय–भाव ने भारत के विशाल हिन्दू समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचायी। सहस्राब्दियों पूर्व के वैदिक, औपनिषदिक, रामायण तथा महाभारतकालीन समाज द्वारा दी गयी स्वस्थ चिन्तन व संस्कार युक्त परम्परा अतीत की वस्तु बनकर रह गयी जो केवल पुस्तकों तथा कथाओं तक सीमित रही। भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा तथा धर्म और समाज के बीच असन्तुलन उत्पन्न होने लगा। इस स्थिति का समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने अनुचित रूप से उपयोग किया तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, नैतिकता के नाम पर मिथ्या अन्धविश्वास, श्रम तथा कार्य–विभाजन के नाम पर विशेष वर्गों के शोषण का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप समाज में सर्वत्र संकीर्णता, अनुदारता तथा जड़ता फैलने लगी जिसने बाल–विवाह, नारी–स्वाधीनता का अपहरण विधवाओं पर अत्याचार, ऊँच–नीच की भावना पर आधारित छूत–अछूत में विभाजन, बहु–विवाह प्रचलन, दलित व निम्न वर्ग पर अत्याचार, मांसाहार व मद्य–प्रयोग को धर्म व संस्कृति से जोड़ना आदि सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया। ये सामाजिक बुराईयाँ व कुरीतियाँ भारतीय समाज में घुन की तरह लगीं तथा किसी समय के सुदृढ़, स्वस्थ व प्रगतिशील भारतीय समाज को इतना जर्जर व खोखला बना दिया कि वह विदेशी आक्रमण तथा परकीय अत्याचारों का सामना करने में असमर्थ हो गया। भारतीय समाज की इस अधोगति तथा सामाजिक विघटन के लिए बाह्य शक्तियों के साथ–साथ हिन्दू समाज में आये मिथ्या विश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथायें, रूढ़िग्रस्त व जड़ विश्वास भी जिम्मेदार थे! यह किसी समाज की वह अवस्था थी जहाँ उसमें परिवर्तन लाने के लिए बड़े स्तर पर समुदाय के मौलिक मूल्यों व सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करना आवश्यक हो गया था। समाज के पतन को रोकने के लिए समस्त समुदाय की जीवनधारा में परिवर्तन, व्यक्तियों एवं समूहों की आवश्यकताओं को जानकर उनका अध्ययन व विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करना ही समाज–सुधार का उद्देश्य है तथा समाज–सुधार की एक वैज्ञानिक विधि है। स्वामी दयानन्द ने एक धर्म–संशोधक व धर्म–व्याख्याता के साथ–साथ एक समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज की इस अवस्था को पढ़ा, जाना और उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

समाज-सुधार क्या है?

समाज–सुधार सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख अभिकरण है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बुराईयों व कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समाज को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। समाज–सुधार का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, एक ऐसा परिवर्तन जिससे समुदाय के मौलिक मूल्य व संस्थाएं प्रभावित होती हैं। समाज–सुधार द्वारा समस्त समुदाय की जीवन–धारा में परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर सामाजिक व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होता है जिससे समाज प्रगति कर सके।

स्वामी दयानन्द के समाज-सुधार में वैज्ञानिक आधार

भारतीय समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तनों ने महर्षि दयानन्द को बहुत गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय समाज के धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उसकी सामाजिक परिस्थितियों तथा एक साधारण व्यक्ति की व्यथाओं व परेशानियों का वैज्ञानिक अन्वेषण किया। इसीलिए स्वामी जी द्वारा किये गये समाज–सुधार चाहे वह नारी–उत्थान के विषय में हो या हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुप्रथाओं अथवा मूर्तिपूजा या कर्मकाण्डों का खण्डन हो, सभी वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे गये। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द के योगदान में जहाँ धर्म–सुधार एक आधार था वहीं इस समाज व मनुष्य की सामाजिक मनःस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा सोच के द्वारा इसमें परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न भी।

उन्नीसवीं सदी में ही भारतीय समाज की क्षति को रोकने के लिए स्वामी जी ने एक समाजशास्त्री की भूमिका निभाई तथा समाज को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया। उनके समाज–सुधार–सम्बन्धी कार्य तत्वज्ञान और यथार्थता के सिद्धान्तों पर आधारित थे जिनमें मानव–समाज की छोटी से छोटी विकृति की ओर भी ध्यान दिया गया। शिवरात्रि के पर्व पर शिव प्रतिमा का चूहे द्वारा किये गये अपमान की एक साधारण प्रतीत होने वाली घटना ने न केवल स्वामी दयानन्द के जीवन को असाधारण मोड़ दिया अपितु भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जगत् में क्रान्ति का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ। यह ईश्वर–सम्बन्धी अशुद्ध विचारों के विषय में उनका पहला कुठाराघात था।

स्वामी जी के समाज–सुधार में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य को अपनी बुद्धि, विवेकशक्ति तथा चिन्तन–प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते थे तथा उसके लिए उसे उचित वातावरण भी देने का प्रयत्न करते थे। यह उनके प्रगतिशील विचारों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यहाँ मैं १ जुलाई १८७७ को प्रकाशित 'बिरादरे हिन्द' में स्वामी जी के विषय में छपे एक लेख को उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उनके उदार, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया गया है– '' ..... उनके विचार प्रायः उदार तथा अधिकांश विचार इस समय के विद्वतापूर्ण विचारों के अनुकूल हैं। मस्तिष्क उनका अत्यन्त प्रगतिशील प्रतीत होता है। इस व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रीय सहानुभूति और राष्ट्रीय सुधार का बहुत बड़ा उत्साह स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक सुधार की दृष्टि से यह व्यक्ति मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा शत्रु है और उन लोगों में से है जो इन दिनों मूर्तिपूजा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, इस व्यक्ति को इस समय का बहुत बड़ा मूर्तिभंजक कहें तो अनुचित न होगा। जहाँ तक धार्मिक सुधारों का प्रश्न है, ब्रह्म–समाज भी सिद्धान्त–रूप में मूर्तिपूजा को दूर करना और इस संसार में ईश्वरोपासना का प्रचार करना चाहता है। इसलिए उसका तो यह व्यक्ति एक देवदूत की भांति सिद्ध होगा। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। यह व्यक्ति केवल धार्मिक सुधार का ही अभिलाषी नहीं है, अपितु समस्त जातीय बुराईयों के सुधार को दृष्टि में रखता है, जैसे देश में फैल रहा बाल्यावस्था में विवाह आदि। वह स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वतन्त्रता का विशेष रूप से इच्छुक है और उसकी यह भी सम्मति है कि जब तक उनमें शिक्षा न फैलेगी तब तक उन्हें अपनी कैद से छुटकारा प्राप्त न होगा, और तब तक इस देश में किसी स्पष्ट उन्नति की आशा करना व्यर्थ है। सारांश यह है कि जाति से अविद्या और पक्षपात को दूर करना, विद्या का प्रचार करना और सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना और उसे साधारण सभ्यता के रूप में लाकर एक श्रेष्ठ नमूना बनाने का यत्न करना, इस व्यक्ति का सामान्य और विशेष उद्देश्य है।''

– बाल-विवाह का वैज्ञानिक आधार पर विरोध

स्वामी जी के समाज–सुधार के कार्य उनके द्वारा समाज के गहरे अध्ययन पर आधारित थे। यह अध्ययन समाज की वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् सत्य पर आधारित था और सत्य के विषय में उनके विचार बहुत स्पष्ट थे। अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वामी जी ने सत्य के विषय में कहा है कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मेरे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाशन करता है। परन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का विरोध उन्होंने उस समय की सामाजिक स्थितियों की यथार्थता को स्वीकारते हुए किया। उन्हें भली–भाँति ज्ञात था कि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रथा के विरोध को उचित नहीं मानेगा, परन्तु मनुष्य के विकास में बाधक किसी भी प्रकार की प्रथा को वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह सत्य के मार्ग में बाधक थी और मनुष्य के शरीर की संरचना और उसका विकास स्वामी दयानन्द ने आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक आदि से वैज्ञानिक आधार पर यह जान लिया था कि किस आयु में स्त्री, पुरुष में परिपक्वता आती है। इसलिए उनका दृढ़ विश्वास था कि बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें स्वस्थ मनुष्य और स्वस्थ समाज के विकास में बाधक हैं। बाल–विवाह का विरोध करने के पीछे एक वैज्ञानिक आधार यह भी था कि मनुष्य में प्रजनन–क्षमता तथा प्रक्रिया यौवनावस्था (१२ वर्ष से १६ वर्ष) में चरम सीमा पर होती है और इस अवस्था में 'मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता इसलिए उन्होंने स्त्री और पुरुष के विवाह की आयु उनके पूर्ण रूप से विकसित और मानसिक व शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाने पर निश्चित की।

– अर्थशास्त्र पर आधारित गो-रक्षा

स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में गोधन की रक्षा तथा गोहत्या के विरुद्ध संघर्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। गोधन को स्वामी जी मनुष्य–जाति के लिए बहुत उपयोगी और जीवनदायी मानते थे। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गोधन के अर्थशास्त्र को समझाया। यह भी उनके समाज–सुधार का एक वैज्ञानिक आधार ही था जिसमें उन्होंने साधारण मनुष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक सन्तुलित समाज के विकास का मार्ग बनाया। यह उस समय का एक आवश्यक सुधार–क्षेत्र था जिसमें समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने संसाधानों को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिए प्रेरित करना आपश्यक था।

– समग्र सुधार का आह्वान

स्वामी दयानन्द के चिन्तन और कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्टरूप से दिखाई देती है। धार्मिक क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समाकालीन समाज–सुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाना तो उनका लक्ष्य था ही, स्वदेश की हीन अवस्था से भी वे पूरी तरह परिचित थे। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेजी शासन में प्रचलित न्याय–प्रणाली दोषपूर्ण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन काल में प्रचलित पंचायत–प्रणाली, जिसमें ग्राम को इकाई मानकर वहां निवासियों के आपसी वाद–विवादों को मिल बैठकर सुलझा लिया जाता है, ग्राम–पंचायत–व्यवस्था भारत जैसे ग्रामीण प्रधान देश के लिए अनुकूल है। ब्रिटिश राज्य की समाप्ति के पश्चात् भारत में स्थानीय स्तर पर जो पंचायत राज्य स्थापित किया गया उसका आधार वही प्राचीन पंचायत राज्य प्रणाली है जिसे स्वामी जी भारतीय स्थानीय स्वशासन के लिए उचित मानते थे। यह स्वामी दयानन्द का भारतीय समाज के विषय में गहन चिन्तन का प्रतीक है और भारतीय समाज की परिस्थितियों का एक वैज्ञानिक मूल्यांकन। संक्षेप में, महर्षि दयानन्द की विचारधारा एक प्रगतिशील विचारधारा थी और वे सत्य के अन्वेषक थे। उनका दृष्टिकोण व्यापक था, वे जीवन और समाज की पूर्ण व्याख्या करना चाहते थे और अपनी विचार क्रान्ति में सबको साथ लेकर चलना उनका ध्येय था, यही समाज–सुधार में महत्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक तथ्य हैं जो स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में प्रमुख थे। अन्त में डॉ० सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा उद्धृत ये शब्द स्वामी जी के व्यक्तित्व व वैज्ञानिक सोच को और अधिक स्पष्ट करते हैं– ''यदि कोई दयानन्द के दृष्टिकोण को समझले तो यदि वह ईसाई है तो और भी अधिक अच्छा और ईमानदार ईसाई बन सकता है; हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बन सकता है; जैन, मुसलमान, सिक्ख, पारसी है तो अच्छा जैन, मुसलमान, सिक्ख और पारसी बन सकता है; यदि वह राजनीतिक और राष्ट्रवादी है तो दयानन्द के दृष्टिकोण को समझ लेने पर वह अपने क्षेत्र में अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकता है, यदि वह समाजवादी और साम्यवादी है तो वह अच्छा समाजवादी या साम्यवादी बन सकता है; ब्राह्मण अच्छा ब्राह्मण, शूद्र अच्छा शूद्र बन सकता है।''

सन्दर्भ ग्रन्थः–

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, पण्डित लेखराम, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

२. नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती, डॉ० भवानीलाल भारतीय, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।

३. सत्यार्थप्रकाश; स्वामी दयानन्द सरस्वती; वैदिक मन्त्रलय; अजमेर।

४. महर्षि दयानन्द; इन्द्र विद्यावाचस्पति; सुबोध पब्लिकेशन; नई दिल्ली।

५. आर्य मान्यतायें; कृष्ण चन्द्र गर्ग; आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

एम.टी.एच.-७, विश्वविद्यालय परिसर,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११६

दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत में योग सम्राट एवं योग साम्राज्ञी प्रतियोगिता का आयोजन

योग से स्वास्थ्य के साथ-साथ अध्यात्म की शक्ति प्राप्त होती है

– स्वामी आर्यवेश

सोनीपत : 14 अप्रैल, 2017 को श्री गायत्री योग संस्थान एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में आज दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत में श्री गायत्री योग कप का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भाजपा नेता व मीडिया प्रभारी राजीव जैन रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए राजीव जैन ने कहा कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। स्वस्थ शरीर हम योग द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। आज योग को अपने जीवन में अपनाकर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। योग से जहां बीमारियों से बचा जा सकता है वहीं इसको एक खेल के रूप में अपनाकर युवा अपना कैरियर भी बना सकते हैं। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि योग से अध्यात्म की शक्ति प्राप्त होती है। आज के भौतिकवादी युग में योग का महत्त्व और ज्यादा बढ़ गया है। योग के आठ अंगों को अपनाकर ही हम धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तक पहुंच सकते हैं।

स्वामी जी ने कहा कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति दुःख से छूटना चाहता है और साथ ही परम सुख अथवा परमानन्द को प्राप्त करना चाहता है। इस लक्ष्य की पूर्ति योग के माध्यम से की जा सकती है। उन्होंने कहा कि आत्मोन्नति के लिए मानव को आध्यात्मिक तथा संयमयुक्त जीवन को अपनाना चाहिए जिससे व्यक्ति के मन, वाणी तथा कर्म तीनों पवित्र हो जाते हैं। जब मनुष्य अपने दोषों को देखता है अथवा आत्म निरीक्षण करता है तब वह ऊपर उठता है, अच्छे गुणों को धारण करता है। संसार में सबको समान देखता है तथा राग–द्वेष से परे हो जाता है, साथ ही अपना कल्याण करता है तथा दूसरों का भी कल्याण करता है। स्वामी जी ने कहा कि योग के आठ अंग हैं जिसको अष्टांग योग कहते हैं। उनका पालन करने से मनुष्य अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करता है और आनन्दमय भी हो जाता है। अतः प्रत्येक युवा को अपने जीवन में किसी न किसी रूप में योग को अवश्य अपनाना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री आजाद सिंह बांगड़ ने कहा कि युवाओं को खेल के रूप में योग को प्राथमिकता के आधार पर चुनना चाहिए। पुराना समय भी योग का रहा है तथा आने वाला समय भी योग का ही है।

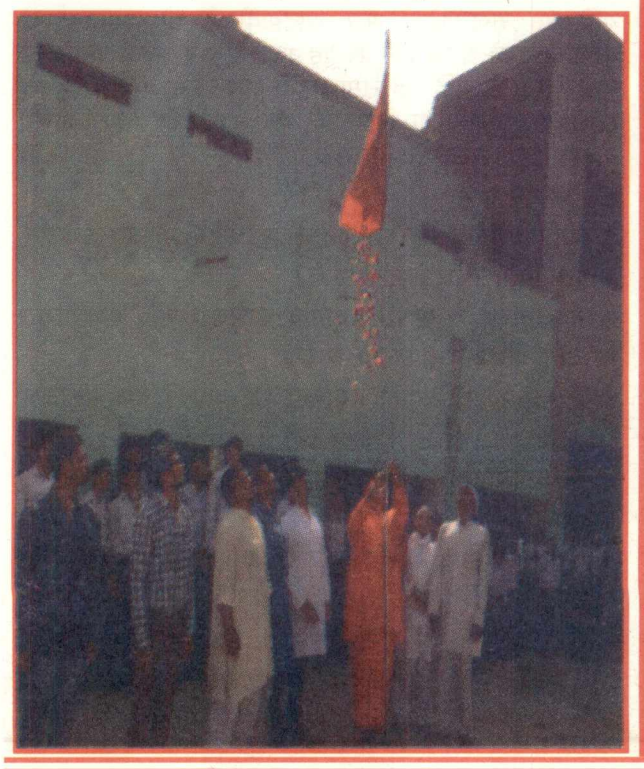

भाजपा की प्रदेशाध्यक्ष कविता चौधरी ने कहा कि खेल हमें जीवन में अनुशासन सिखाते हैं तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

यश बने योग सम्राट

आज की प्रतियोगिता में श्री गायत्री योग सम्राट कप के विजेता दून स्कूल सोनीपत के यश रहे। जिन्होंने अपने प्रतिद्वंदियों को कांटे के मुकाबले में हराया। जबकि योग साम्रज्ञी का खिताब पूजा (मीमारपुर) सोनीपत को मिला। विभिन्न आयु वर्ग में प्रतिभागी विजेताओं को प्रमाण पत्र व ट्राफी देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. राम किसान सरोहा, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, जतिन राणा, परमजीत, इंसपेक्टर वीरभान हुड्डा, नरेश, बलराम आर्य, अंकित, मनेन्द्र आदि उपस्थित रहे।

श्री गायत्री योग संस्थान के चेयरमैन आचार्य प्रवीन के संयोजन में मुख्य निर्णायक राष्ट्रीय स्तर के योग प्रशिक्षक रहे जिनमें रोहतक से जनक राज, सुषमा जैन (दिल्ली), प्रमोद प्रजापत (सोनीपत) अरविन्द स्वामी रहे। प्रतियोगिता में विभिन्न जिलों के लगभग 200 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः "ओ३म्" संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है।

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून, मंगलवार, 2017 से 12 जून, सोमवार 2017 तक

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जाएगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो-कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जाएगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जाएंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध जागरूक किया जाएगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ न लेकर आएं।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लाएं।
- इच्छुक छात्राएं 100 रूपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश-पत्र अपने माता-पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातःराशन आदि पर लाखों रूपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएं। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट युवा निर्माण अभियान अथवा महिला समता मंच के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइन्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिए गए दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक :

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

महिला समता मंच एवं स्वामी इन्द्रवेश फांउडेशन

कार्यालय – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

सम्पर्क नं.– 9416630916, 9354840454 ☎ 01262.286900

भारत छोड़ो आन्दोलन की तरह ही चलेगा नशामुक्त भारत आन्दोलन

– स्वामी अग्निवेश

नशों के खिलाफ आन्दोलन में सिख पंथ पूर्ण सहयोग करेगा

– ज्ञानी गुरवचन सिंह

आर्य समाज चलायेगा नशे के खिलाफ अभियान

– ओम प्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द धाम बाजार, हंसली के तत्वावधान में वैदिक संस्कृति विरासत सम्भाल कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य समाज स्थापना दिवस व नव सम्वत् 2074 के अवसर पर 'आर्य गौरव दिवस' के रूप में एस.एल. भवन्स स्कूल में श्री ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी अग्निवेश जी, ज्ञानी गुरवचन सिंह जी, जत्थेदार अकाल तख्त, श्री अरविन्द मेहता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, एडवोकेट सुलक्षण सरीन, श्री अविनाश महेन्द्र, श्रीमती स्वराज ग्रोवर, प्रिं. रजनी शर्मा, डॉ. नवीन आर्य, एडवोकेट हंसराज शर्मा, प्रिं. संदीप सरीन, श्री अनिल कपूर, श्री तरसेम लाल आर्य आदि विशेष रूप से उपस्थित हुए।

विश्व के क्रांतिकारी आर्य नेता स्वामी अग्निवेश जी मुख्यअतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। स्वामी जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति विरासत सम्भाल व नव सम्वत् वर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर ''आर्य गौरव दिवस'' मनाते हुए नशे के खिलाफ जागृति अभियान जोर–शोर से चलाया जाना चाहिए। समाज में फैली कुरीतियाँ दीमक की तरह खाकर समाज को खोखला कर रही हैं। हमारा दायित्व बनता है कि इन बुराईयों के खिलाफ एकजुटता से कार्य करें। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की ओर से महात्मा गाँधी की तरह अब आर्य समाज वर्ष 2017 में नशा मुक्त भारत के लिए ''शराब माफिया भारत छोड़ो'' भारत छोड़ो अभियान 9 से 15 अगस्त तक पूरे देश में चलाया जायेगा। इस काम के लिए पूरे देश से भी सहयोग लिया जायेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से सभी मुख्यमंत्रियों से बैठक कर शराबबन्दी के खिलाफ ठोस निर्णय लेने के लिए कहा जायेगा।

इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना कर महर्षि दयानन्द जी ने मानव जाति के लिए बड़ा भारी उपकार किया है। सामाजिक बुराईयों के खिलाफ क्रांतिकारी कदम उठा कर हम सभी आर्यों को समाज में फैली कुरीतियों, अन्धविश्वास, कन्या भ्रूण हत्या, नशे से गुमराह हो रहे नव युवकों को सही रास्ते पर लाने के लिए वेद का ज्ञान

दिया, धर्म की स्थापना की गई है किन्तु हम मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरिजाघरों में बंधकर रह गये। उन्होंने कहा कि पंजाब में कैप्टन सरकार को अपनी चुनावी वादों को पूरा करते हुए पूरे पंजाब में शराबबन्दी की घोषणा करना चाहिए। श्री आर्य ने कहा कि बिहार प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने अपने प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी कर एक नया इतिहास रचा है। देश के दूसरे राज्यों की सरकारों को भी अनुशरण करना चाहिए। श्री आर्य ने कहा कि आर्य समाज के महान संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी की पुण्य तिथि 12 जून को अमृतसर से नशों के खिलाफ जागरूकता अभियान की शुरूआत की जायेगी। इसके अन्तर्गत पंजाब के प्रत्येक जिलों में जन–चेतना यात्राएं निकाली जायेंगी।

श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी गुरवचन सिंह ने कहा कि नशे को समाप्त करने के लिए हमें घर से ही जागरूकता अभियान चलाना चाहिए तभी नशामुक्त समाज की स्थापना हो सकेगी। नशों के खिलाफ, स्कूल, कालेजों में लगातार प्रचार होना चाहिए। नशे के खिलाफ जागरूकता अभियान में हमारा पूर्ण सहयोग रहेगा। श्रीमती स्वराज ग्रोवर व डॉ. नवीन आर्य ने अपने विचार रखे।

श्री विजय सर्राफ, जुगल महाजन, श्रीमती मधुर भाविनी ने सभी मुख्य अतिथियों को शॉल व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन विजय कुमार आर्य, आचार्य दयानन्द शास्त्री, नरेन्द्र आर्य, राज कुमार, अशोक वर्मा, गौरव, सुधीर गुप्ता, सुलोचना आर्या, राकेश आर्या, सुनीता पसाहन, नीलम, कमलेश, गीता, पंकज, सुबाहु, गौरव आर्य, डॉ. अंजू आर्या, ऋषि आर्य, खुशी आर्या सहित आदि ने किया।

इस अवसर पर अमृतसर के सभी आर्य समाजों से तथा धार्मिक, सामाजिक संगठनों के प्रधान देशबन्धु धीमान, इन्द्रपाल आर्य, जवाहर लाल मेहरा, तरुण कुमार, जोगिन्दर लखोतरा, राजेश कपूर, राजेश आहूजा आदि विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम के उपरान्त सबने मिलकर प्रीति भोज का आनन्द उठाया।

– दयानन्द शास्त्री

दस्त कहीं न कर दे आपको पस्त

गर्मी का मौसम अपने साथ लाता है कई तरह की बीमारियाँ। लापरवाही बरतने पर छोटा हो या बड़ा, सभी को कभी न कभी इन बीमारियों से दो–चार होना पड़ता है। इनमें सबसे अहम है – पेट सम्बन्धी समस्याएँ। एक तो बेइंतहा गर्मी और ऊपर से संक्रमित भोजन का सेवन और हाइजीन की अनदेखी करना कई बीमारियों को न्यौता देना है। नतीजतन जाने–अनजाने हमें लगातार उल्टियाँ, पेट में जलन, दर्द, एसिडिटी, पेट अफरना जैसी स्थिति से ही नहीं जूझना पड़ता, डायरिया जैसी बीमारी का भी सामना करना पड़ता है। इस पर ध्यान न दिये जाने पर यह कई बार गंभीर रूप भी ले लेती है। अध्ययनों से साबित हो चुका है कि भारत जैसे विकासशील देशों में डायरिया आम है।

क्या है डायरिया : डायरिया या अतिसार पेट खराब होने की ऐसी स्थिति है, जिसमें पीड़ित व्यक्ति को दिन में कई बार पानी की तरह पतला मल आता है। इसे आम भाषा में दस्त या लूज मोशन भी कहा जाता है। डायरिया की वजह से पीड़ित व्यक्ति के शरीर में मौजूद पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स (सोडियम और पोटैशियम जैसे मिनरल्स) मल के साथ अत्यधिक मात्रा में निकल जाते हैं। इससे उसके शरीर का इलेक्ट्रोलाइट संतुलन गड़बड़ा जाता है और डीहाइड्रेशन हो जाता है।

क्या हैं कारण : गर्मी के मौसम में खाना संक्रमित हो जाता है। बैक्टीरिया से संक्रमित आहार खाने से, तला–भुना या गरिष्ठ भोजन करने से, बासी तथा बाहर का खाना या कटे हुए फल खाने से, दूषित पानी पीने से, साफ–सफाई का ध्यान न रखने और समय–असमय खाने से अक्सर अपच या बदहजमी की समस्या हो जाती है। अपच खाना दस्त के रूप में शरीर से बाहर निकालता है। इस प्रक्रिया में शरीर से पानी भी बाहर निकल जाता है और डायरिया की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

क्या हैं लक्षण : आयुर्वेद में डायरिया को त्रिदोष असंतुलन (वात, पित्त और कफ) से जोड़कर देखा जाता है। दस्त तब होता है, जब जठराग्नि कमजोर होती है और भोजन को पचाने की प्रक्रिया धीमी होती है। खाना खाने में लापरवाही बरतने और गलत आदतों की वजह से शरीर में त्रिदोष असंतुलन पैदा हो जाता है, जो डायरिया का कारण बनता है।

कब जायें डॉक्टर के पास : डायरिया ऐसा रोग है, जिसका अगर पूरा ध्यान रखा जाये और कुछ एहतियात बरती जाये तो घर में ही रोगी ठीक हो जाता है। जरूरी है कि डायरिया पीड़ित व्यक्ति की स्थिति का जायजा घर पर ही लिया जाये। उसे एकदम से एंटीबायोटिक दवा न देकर वेट और वॉच पॉलिसी अपनानी चाहिए। यानी अगर रोगी को दिन भर में 4–5 बार दस्त जाना पड़ रहा है तो वह कमजोरी जरूर महसूस करेगा, लेकिन अगर वह आधे–एक घंटे में यूरिन ठीक पास कर रहा है और सक्रिय है तो घबराने की जरूरत नहीं है। उसका उपचार घर पर ही आसानी से किया जा सकता है।

पीड़ित व्यक्ति को बुखार हो गया है तो इसका मतलब है कि उसे बैक्टीरियल या वायरल इंफेक्शन हो गया है। ऐसी स्थिति में डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिए।

क्या है आयुर्वैदिक उपचार : आयुर्वेद में दस्त के लिए अनेक उपचार हैं। आयुर्वेद के हिसाब से डायरिया पीड़ित व्यक्ति को 15–20 मिलीलीटर कुटजारिष्ट दवा बराबर मात्रा में पानी में मिलाकर सुबह–शाम लेना फायदेमंद है।

आयुर्वेद के हिसाब से डायरिया होने पर 2 दिन का उपवास रखने से बढ़कर कोई इलाज नहीं है। पीड़ित व्यक्ति द्वारा ली जाने वाली लिक्विड या सेमी लिक्विड डाइट लेना जल्दी ठीक होने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस स्थिति में पेट ठोस आहार नहीं पचा पाता, इसलिए उसे लिक्विड डाइट लेने की सलाह दी जाती है। इससे पीड़ित व्यक्ति के शरीर में पौष्टिक तत्त्वों की आपूर्ति हो जाती है और उसमें रोग–प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। लिक्विड डाइट भी उसे थोड़ी–थोड़ी मात्रा में नियत अंतराल पर दी

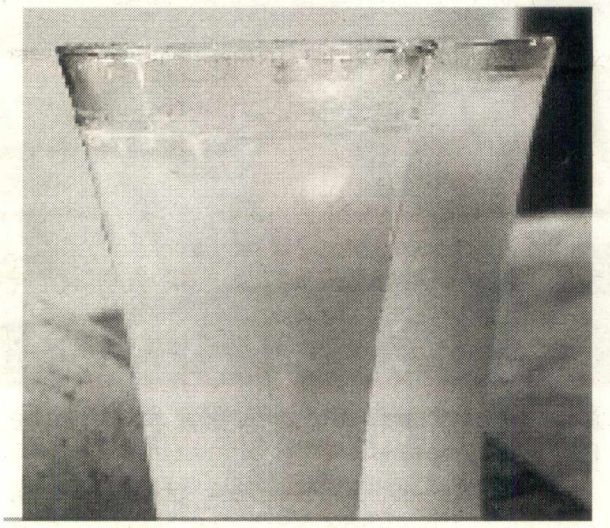

जानी चाहिए, ताकि वो उसे आसानी से पचा सके और जल्दी आराम पहुंचे। ऐसी ही कुछ डाइट्स के बारे में जानना जरूरी है।

- चावल का पानी डायरिया में काफी मदद करता है। यह हल्का होने के साथ–साथ कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होता है और रोगी के लिए फायदेमंद होता है।
- रोगी को मूंग दाल की पतली खिचड़ी दही के साथ दी जा सकती है।
- एंटी इन्फ्लेमेटरी गुणों से भरपूर नींबू दस्त में आराम पहुंचाता है। नमक और चीनी मिलाकर तैयार किया नींबू पानी डीहाइड्रेशन के खतरे को कम करने में काफी सहायक है।
- मिनरल्स से भरपूर नारियल पानी डायरिया पीड़ित को ठंडक प्रदान करता है और डीहाइड्रेशन में राहत पहुँचाता है।
- बाजार में मिलने वाला रेडिमेड ओआरएस का घोल भी पीड़ित व्यक्ति को दे सकते हैं। अगर यह उपलब्ध न हो तो आप घर में ही पानी में नमक–चीनी का घोल बनाकर दे सकते हैं। यह शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखकर पानी की कमी को पूरा करता है।
- बैक्टीरियल इन्फेक्शन से हुए डायरिया की रोकथाम में दही अमृत के समान है। दही में प्रोबायोटिक गुण होने के कारण यह पेट और आंतों में मौजूद विषैले बैक्टीरिया का सफाया करता है और डायरिया के इलाज में सहायक होता है। डायरिया पीड़ित व्यक्ति को दही में भुना–पिसा जीरा और नमक मिलाकर सुबह शाम देना फायदेमंद है। दही में मैश किया या कटा केला मिलाकर खाना असरदार है। दही की लस्सी में एक–एक चुटकी पिसा जीरा, सोंठ और काली मिर्च का पाउडर मिलाकर दे सकते हैं। छाछ में पुदीना के कुछ पत्ते क्रश कर मिला सकते हैं, जो पेट की सूजन और जलन को शांत करने में सहायक है।
- एंटी बैक्टीरियल गुणों वाले पुदीने के पत्ते से एक चम्मच रस निकालें और उसमें एक चम्मच शहद और नींबू का रस अच्छी तरह मिलाएं। यह मिश्रण दिन में 2–3 बार लें। पुदीना पाचन प्रक्रिया को सुचारू बनाने में सहायक होता है और इससे दस्त में आराम मिलता है।
- एक छोटे चम्मच भुने–पिसे जीरे में एक चम्मच मिश्री मिलाकर पानी के साथ देने से पेट की जलन में आराम मिलता है।
- डायरिया में अदरक का रस काफी असरदार रहता है। एंटी बैक्टीरियल और एंटी फंगस गुणों से भरपूर अदरक का रस पाचन प्रक्रिया को सुचारू बनाने और पेट सम्बन्धी समस्याओं के इलाज में मदद करता है। एक चम्मच अदरक के रस में आधा चम्मच शहद और थोड़ा सा पानी मिलाकर पियें।
- दिन में एकाध बार संतरे और अनार का जूस भी डायरिया के रोगी को दिया जा सकता है। नमक लगाकर केला खाना भी फायदेमंद रहता है।
- ठंडी तासीर वाला बेल का शर्बत और मुरब्बा भी ऐसे रोगी को दिया जा सकता है। बेल फल दस्त को रोकने में प्रभावी है।
- कम दूध और कम चीनी की हर्बल चाय पीना डायरिया के रोगी के लिए फायदेमंद है।
- रात के समय दही में इसबगोल का गाढ़ा मिश्रण दे सकते हैं। चाहे तो स्वाद के लिए इसमें नमक, काली मिर्च और सोंठ पाउडर मिला सकते हैं।
- दस्त की स्थिति में घीया या लौकी की रसदार सब्जी या जूस पीना फायदेमंद है। पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर यह सब्जी हल्की होने के साथ–साथ सुपाच्य भी खूब होती है। शरीर में पानी की कमी या डीहाइड्रेशन रोकने में यह काफी मददगार साबित होती है।

बरतें सावधानी

गर्मी के मौसम में हमारे शरीर का पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है। अगर हम तला–भुना गरिष्ठ भोजन अधिक करते हैं तो इसका असर हमारे पाचन तंत्र पर जरूर पड़ेगा। नतीजतन आज नहीं तो कल दस्त की समस्या तो होगी ही। इसलिए जरूरी है कि इस मौसम में अपने खाने–पीने का ध्यान रखें।

- गर्मियों में एक बार में भरपेट खाने की बजाय थोड़ा–थोड़ा खायें। कम घी–तेल वाला हल्का और ताजा भोजन खायें।
- जहाँ तक हो सके तला–भुना, मसालेदार भोजन खाने से बचें।
- गर्मी से राहत पाने के लिए कोल्ड ड्रिंक्स की बजाय नीबू पानी, नारियल पानी, छाछ, फलों का जूस, शरबत, ठंडाई या फिर शेक ज्यादा से ज्यादा पियें।
- शरीर को ठंडक प्रदान करने वाले और इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाये रखने वाले आहार अधिक मात्रा में खायें। खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूजा आदि अधिक खायें।
- बाजार में मिलने वाले पहले से कटे हुए फल बिल्कुल न खायें।
- चटपटा खाना, खट्टे खाद्य पदार्थ या मीठी चीजें खाने से परहेज करें। ये पदार्थ डायरिया की समस्या को बढ़ा सकते हैं।

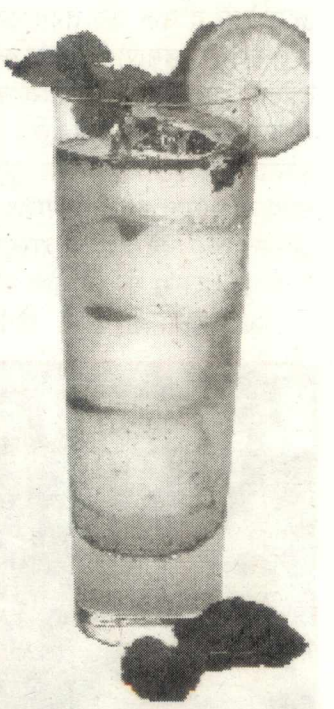

– साभार हिन्दुस्तान दैनिक समाचार

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा, उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

एक निवेदन

मान्यवर!

पश्चिम ओडिशा के प्रमुख शिक्षा केन्द्र, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष चल रहा है। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आर्यों का तीर्थ स्थल संस्कृति एवं संस्कार की रक्षा भूमि गुरुकुल आमसेना की स्थापना मार्च माह 1968 में स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने की थी। स्थापना का वह समय इस क्षेत्र के सुदिनों के आरम्भ का समय था। विकट परिस्थितियों में स्थापित यह संस्था इस क्षेत्र की ही नहीं अपितु पूर्वोत्तर भारत की सर्वाधिक प्रशंसित एवं समाजसेवा में अग्रणी संस्था है। हजारों ब्रह्मचारियों ने यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश और समाज की जो बहुमूल्य सेवा की उसका आंकलन हर्ष एवं आनन्द प्रदान करता है। भारतभर में फैले आर्य जगत के समस्त समाजोपयोगी कार्यों तथा नागालैण्ड से लेकर राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तक फैली समस्त आर्य संस्थाओं में गुरुकुल के स्नातक समाज सेवा का अनूठा कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व जितना महान होता गया संस्था के कार्य भी उसी प्रकार विस्तारित होते गये।

सत्वे सिद्धिः भवति महतां नौपकरणैः।

स्वल्प साधनों के साथ आरम्भ हुई संस्था आज सर्वसाधनों से सम्पन्न, योग्य आचार्यों, कार्यकर्ताओं, समाजसेवियों, उपदेशकों की कर्मभूमि है। संस्था के कार्यों का विस्तार इस प्रकार हुआ कि 18 अन्य सहयोगी संस्थाओं की स्थापना स्वामी जी महाराज के कर–कमलों द्वारा नागालैण्ड, आसाम, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा आदि प्रदेशों में हुई है।

समाजसेवा के प्रकल्पों में 100 बिस्तरों सहित आधुनिक चिकित्सालय, औषधालय, आयुर्वैदिक फार्मेसी, कृषि फार्म्स, बागवानी, साहित्य प्रकाशन विभाग, अन्न वितरण, वस्त्र वितरण, प्रचार विभाग, कन्या महाविद्यालय, आदिवासी क्षेत्रों में कन्या छात्रावास, गौसेवा केन्द्र, शुद्धि विभाग सहित आधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन परम्परा के विद्यालयों की स्थापना प्रमुख हैं।

50 वर्षों के सिंहावलोकन के इस पुनीत अवसर पर आप संस्था के सहयोगीजनों को आमंत्रित करते हुए हमें हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। आपका आगमन इन कार्यों एवं ऋषि परम्परा के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा का द्योतक है। अभी से अपनी दैनन्दिनी में ये तिथियाँ लिख लीजिए। **23 दिसम्बर, 2017 से 25 दिसम्बर, 2017 तक आपका सादर निमंत्रण है।**

आइये! समस्त विश्व के आर्यबन्धु इस महान अवसर के साक्षी बन स्वर्ण जयन्ती उत्सव को सफल में अपना योगदान करें। आपके आगमन की प्रतीक्षा रहेगी। अपनी संस्था एवं इष्ट मित्रों सहित जरूर पधारियेगा। कुम्भ की शोभा बढ़ेगी, ऋषि परम्परा बढ़ेगी, ऋषि दयानन्द जी के स्वप्न साकार होंगे। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज की तपःस्थली आपको स्नेह सहित निमंत्रण भेज रही है।

दर्शनाभिलाषी

माता परमेश्वरी देवी	स्वामी व्रतानन्दसरस्वती	रुद्रसेन सिन्धु	सुरेश अग्रवाल	डॉ. पूर्ण सिंह डबास	आचार्य वीरेन्द्र कुमार
प्रधाना	आचार्य	उपप्रधान	उपप्रधान	वरिष्ठ संरक्षक	मंत्री

143 वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस और नवसंस्येष्टि पर्व के उपलक्ष्य पर आर्य सामज गंगा विहार ने वेद प्रचार अभियान चलाया

आर्य समाज गंगा विहार ने वेद प्रचार वार्षिकोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस दिनांक 29 व 30 मार्च, 2017 तक मंगल मैरिज हाउस हजीरा ग्वालियर में मनाया गया। कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वान, पलवल, हरियाणा के स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने आर्य समाज एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती व नवसंवत्सर वेदों की महिमा पर प्रकाश डाला तथा मध्य प्रदेश में बूचड़खानों को बन्द कर पशु हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने का आह्वान किया है।

इन्दौर से पधारे आचार्य भानुप्रताप विद्यालंकार ने वेदों को जाने ईश्वर को समझें एवं छन्दशास्त्र पुस्तक विमोचन के अलावा देशभक्त क्रांतिकारी की महिमा बताई। ग्वालियर के युवा विद्वान् सत्येन्द्र शास्त्री ने भी स्वदेशी वस्तुओं के बारे में बताया एवं यज्ञ कराया।

आचार्य अशोक कुमार ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा अपने भजनों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया एवं शॉल, श्रीफल तथा प्रमाण पत्र के द्वारा अनेक आर्य समाजी व कर्मठ कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय विद्वान विनोद शुक्ला, राजेश्वर राव ने अपने विचार रखे तथा आर्य समाज गंगा विहार की प्रधान श्रीमती साधना सिंह ने भी ईश्वर भक्ति के भजन गाये एवं आभार प्रकट किया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रपधान श्री परमाल सिंह कुशवाहा ने विद्वानों का स्वागत एवं आभार प्रकट किया। इस अवसर पर ग्वालियर जिले से 7 आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं आर्य सदस्यों की मौजूदगी में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ इस कार्यक्रम में ग्वालियर के अलावा भिण्ड, मुरैना, अम्बाह, दतिया से भी आर्य समाजियों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

आर्य समाज ने समय–समय पर अनेक बुराईयों का विरोध किया है। आर्य समाज यज्ञ, योग, वेदकथा प्रवचनों के माध्यम से देश में व्याप्त कुरीतियों को दूर कर एवं अच्छे राष्ट्र का निर्माण करना चाहता है। स्कूलों के पाठ्यक्रमों में आर्य बाहर से आये हैं। ऐसा पढ़ाया जाता है इसको हटवाने की मांग आर्य समाज सरकार से करता है।

देश की आजादी में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है और देश की आजादी के दीवानों में 80 प्रतिश देशभक्त एवं क्रांतिकारी आर्यसमाजी थे। जिन्होंने अपना बलिदान कर देश को आजाद करवाया।

आर्य समाज के कार्यक्रम का समापन एवं आभार प्रवचन उपप्रधान श्री केशव सिंह परमार के द्वारा किया गया।

श्रीमद्दयानन्दार्ष गुरुकुल तेजस हेड़ा, मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव

श्रीमद्दयानन्दार्ष गुरुकुल तेजस हेड़ा, मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव 15–16 मार्च, 2017 को मनाया गया। वार्षिकोत्सव में स्वामी कर्मवीर जी ने कहा कि यह गुरुकुल डॉ. रघुवीर वेदालंकार जैसे संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित तथा वेदों के मर्मज्ञ के आचार्यत्व में चल रहा है। अतः यहां से इन जैसे विद्वान ही निकलने चाहिए। स्वामी जी ने गुरुकुल को एक गाय तथा 1100/– रुपये दान में दिए। सम्मेलन के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी ने भी ट्यूवैल के लिए 51000/– रुपये दिये तथा कहा कि गुरुकुलों के माध्यम से ही आर्ष पाठविधि की रक्षा सम्भव है। डॉ. आनन्द कुमार, आचार्य यज्ञवीर तथा डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने भी अपने विचार प्रकट किये। स्वामी प्रणवानन्द जी की देखरेख में यह गुरुकुल अभी बी.टी.सी. कॉलेज के भवनों में चल रहा है। यहां के आचार्य डॉ. रघुवीर जी ने गुरुकुल के भवन निर्माणार्थ भूमि प्रदान की है। नये सत्र में छात्रों के प्रवेश किये जायेंगे। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।

यह गुरुकुल दिल्ली से हरिद्वार वाले मार्ग पर मुजफ्फरनगर से आगे बरला नामक कस्बे के पास स्थित है।

– मो.:– 9868144317

गुरुकुल होशंगाबाद में नवीन प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक 15 जून से 15 जुलाई, 2017 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें :– 09424471288, 09907056726

आचार्य सत्यसिन्धु आर्य
प्रधानाचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम,
होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

बलिदान दिवस पर याद किया शहीदे आजम भगत सिंह को

जयपुर : 23 मार्च को मोहाना मण्डी रोड स्थित जी.एम. सैनी मेमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग के छात्रों ने संस्कार भवन में 87वें बलिदान दिवस पर अमर हुतात्मा भगत सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। आरम्भ में छात्रों द्वारा भगत सिंह के फांसी पर चढ़ने के दृश्य को नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया, तत्पश्चात् विशिष्ट आमंत्रितों ने भगत सिंह के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में अद्वितीय योगदान को उजागर किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने भगत सिंह को राष्ट्रवाद की धधकती मशाल की संज्ञा दी, वहीं वरिष्ठ पत्रकार जयदेव शर्मा ने अल्पायु में भी परिपक्व सोच का धनी बताया। डॉ. प्रमोद पाल ने भगत सिंह के क्रांति संघर्ष को माटी का मोल चुकाने जैसा बताया। सर्वश्री सुनील अरोड़ा एवं योगेश गोयल ने भी सम्बोधित किया। छात्राओं की ओर से सोनकर, टीना सोनी व सुष्मिता काजला द्वारा वीररस से सराबोर गीत 'रे वतन महबूब मेरे तुझ पर हम कुर्बान' प्रस्तुत किया गया। क्रांतिकारियों के नाम के जयकारों की गूंज के साथ समारोह विसर्जित हुआ।

– पं. ईश्वरदयाल माथुर

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून में 10 से 14 मई, 2017 तक ग्रीष्मोत्सव एवं स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह भव्यता के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन योग साधना प्रातः 5 से 6 बजे तक संन्ध्या एवं यज्ञ प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक तथा सायंकाल 3.30 से 6.00 बजे तक यज्ञ एवं संन्ध्या तथा रात्रि 7.30 से 9.30 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम होगा। रविवार 7 मई को प्रातः 10 से 12 बजे तक नगर में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, भजन संन्ध्या तथा स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह का भी विशेष आयोजन किया गया है। आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन यज्ञ होगा तथा पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज के निर्देशन में योग साधना के कार्यक्रम चलेंगे। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 28–29 अप्रैल, 2017
प्रकाशन की तिथि : 27 अप्रैल, 2017
वैदिक सार्वदेशिक
27 अप्रैल से 3 मई, 2017
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अश्वारोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ।।

—अ० १९/५३/१

ऋषिः—भृगुः ।। देवता—कालः ।। छन्दः—त्रिष्टुप् ।।

विनय—कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं। (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति–केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन–चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है ! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत–से सौर–मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व–ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव की मेरे कोटि–कोटि प्रणाम हैं। भाइयो ! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है? याद रक्खो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले–सकते हैं जो ज्ञानी हैं– जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान–प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल–रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर–उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग–भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँचे सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल–पल, क्षण–क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची–विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ—सप्तरश्मिः=सात रस्सियों वाला ! **सहस्त्राक्षः**=हजारों धुरों को चलाने वाला **अजरः**=कभी भी जीर्ण, बुढ्डा न होने वाला **भूरिरेताः**=महाबली **कालः अश्वः**=समयरूपी घोड़ा **वहति**=चल रहा है–संसार–रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**=सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **तस्य**=उसके **चक्राः**=चक्र हैं– उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **तम्**=उस घोड़े पर **विपश्चितः**=ज्ञानी और **कवयः**=क्रान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**=सवार होते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा भ लौटाएं –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व
फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

तप और त्याग की प्रतिमूर्ति, धुन के धनी महान तपस्वी योगीराज पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर

3 से 5 मई, 2017 तक दयानन्द मठ चम्बा में विशेष यज्ञ एवं उत्सव का आयोजन

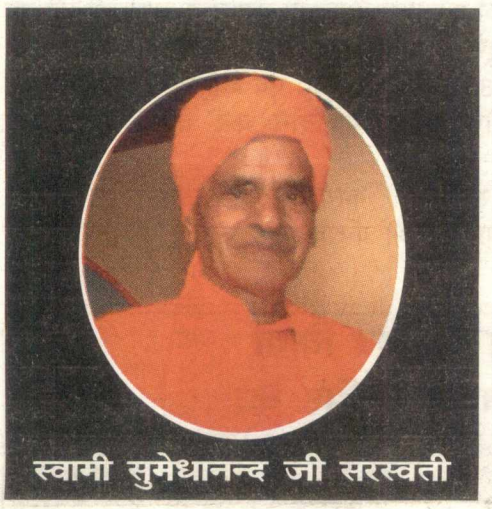

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती

आर्यजनों एवं पूज्य स्वामी जी महाराज के श्रद्धालुओं से निवेदन है कि पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जन्मदिवस आप सभी आत्मीय जनों के सहयोग से मिलकर मनाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। 5 मई, 2017 को पूज्य स्वामी जी महाराज का जन्मदिवस है। इस जन्मदिवस कार्यक्रम में अवश्य पधारकर स्वामी जी महाराज के संकल्पों को पूर्ण करने में सहयोग करें।

आमंत्रित संन्यासी और विद्वान

स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2
स्वामी गंगादास जी महाराज, महामण्डलेश्वर
स्वामी सदानन्द जी, दीनानगर
स्वामी सवितानन्द जी, रांची
स्वामी संतोषानन्द जी आदि के अतिरिक्त विद्वत् शिरोमणि आचार्य रामानन्द जी शिमला, पं. हरीश मुनि जी, श्री यतीन्द्र शास्त्री एवं पं. सुखपाल जी आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

कार्यक्रम

बुधवार 3 मई, 2017 एवं वीरवार 4 मई, 2017

प्रातः 7 से 8.30 बजे तक यज्ञ
8.30 से 10.30 बजे तक भजन व उपदेश
सायं 4 से 5.30 बजे तक यज्ञ
5.30 से 7.30 बजे तक भजन व उपदेश

शुक्रवार 5 मई, 2017

प्रातः 7 से 9 बजे तक यज्ञ व 9 से 12 बजे तक भजन उपदेश
12 बजे से ऋषि लंगर (धाम)

विशेष नोट : आप सभी को ज्ञात ही है कि वर्ष 2015 के मई माह में प्रिय ऋषि कुमार का असामयिक निधन हो गया था और अगस्त, 2015 में ही पूज्य स्वामी जी महाराज का भी देहावसान हुआ था। निःसंदेह थोड़े समय के अन्तराल में इन दोनों विभूतियों का दिवंगत होना दयानन्द मठ चम्बा के लिए पहाड़ के समान संकट की घड़ी था। किन्तु आप सभी के सम्बल से हमने मठ की गतिविधियों को निरन्तर जारी रखा और अपने पुरुषार्थ से इन दिवंगत आत्माओं के संकल्पों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। 3 से 5 मई, 2017 को हम आप सबके साथ अपने संकल्प को मजबूत करते हुए मठ के भावी कार्यक्रम बनायेंगे। आप सबकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। क्योंकि आप सभी के सहयोग से मठ वर्तमान स्थिति तक पहुँचा है।

ऋषि जी

निवेदक

आचार्य महावीर सिंह	प्रबन्धक समिति
अध्यक्ष	तथा स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल
दयानन्द मठ चम्बा	दयानन्द मठ, चम्बा (हि. प्र.)
मो.:–9736396575	01899–222871

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।